

Padma Vibhushan



SHRI SUDARSHAN SAHOO

Shri Sudarshan Sahoo is a sculptor with seven decades of experience in stone, wood & other medium in classical style sculpture. Shri Sahoo has trained more than 250 students including some State and National Awardee artists. He has been making constant effort for awareness and promotion of Indian Classical Sculpture all over the world. He is focused on the skill up gradation of sculptors in the current artistic community.

2. Born on 11th March, 1939 at the religious city of Puri, Odisha, Shri Sahoo's passion for art and crafts was ignited watching sculptors living nearby making beautiful statues from stone. At the age of 13, he started his training in stone carving under Guru Shri Kunia Maharana and subsequently Guru Shri Bhubaneswar Mahapatra. The temples in and around Puri inspired him and awakened the inborn artist in him.

3. Shri Sahoo founded Sudarshan Crafts Museum in 1977 at Puri to train aspiring artists in stone and wood carving and other similar crafts. After the successful completion of the sculptures at Dhauli Peace Pagoda, he expressed his deep gratitude for Buddhist philosophy of world peace by building a Buddha Temple with exotic gold plated decorations in 1985, which is a big tourist attraction in Puri today. Similarly, in 1991 he founded the Sudarshan Art and Craft Village in Bhubaneswar as a Gurukul to bring together teachers and students under the same roof for sharing great skills in a very congenial environment of love and trust. The existing facilities at the campus include practical training spaces, library, hostel, museum and a research centre with the objective to revive the craft in a scientific way for posterity.

4. Shri Sahoo has visited several countries including Japan since 1976, for sculpting and installation of Buddhist statues and Murals. In 1986, he participated in Festival of India in USA and popularised Indian Classical Sculpture through his lecture and demonstration. He has participated in numerous solo and group exhibitions in major cities of India and abroad. Among them, the 2011 and 2018 exhibitions at the Jehangir Art Gallery, Mumbai were a great success as they received critical acclaim from the art connoisseurs and critics of repute and standing. In 2018, his show on the Odisha Parba in the India Gate lawns enthralled lakhs of people in Delhi. Shri Sahoo continues to guide, inspire and create because age has failed to dampen his spirit which could be attributed to his adaptability to changing tastes, innovative ideas and a much disciplined lifestyle.

5. Shri Sahoo has received various awards and honours including Shreekheta Shree in 1976; National Award for Stone Carving in 1981 by the President of India; Padma Shri in 1988; the Kamaladevi Chottopadhyaya Award and Shilp Guru Award by the Vice-President of India in the year 2003 and Dharmapada Award by Odisha Lalit Kala Academy in 2012 etc. In the year 2011, Utkal University of Culture, Bhubaneswar conferred him with the Honorary D.Litt. Degree. In 2018, he was appointed Chairman of Odisha Handloom and Handicrafts Development and Promotion Council. A pictorial biography on his life and works, "Sudarshan Sahoo — a legacy set in stone" was published in the year 2018. The journey of Shri Sahoo the octogenarian sculptor continues to inspire generations to come.

पद्म विभूषण



श्री सुदर्शन साहू

श्री सुदर्शन साहू प्राचीन मूर्तिशिल्प कलाकार हैं और वह प्रस्तर, काष्ठ और अन्य वस्तुओं से मूर्तियां बनाने का सात दशक का अनुभव रखते हैं। श्री साहू ने 250 से अधिक छात्रों को प्रशिक्षित किया है जिनमें से कुछ राज्य-स्तरीय और राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार विजेता कलाकार हैं। वह पूरी दुनिया में भारत की प्राचीन मूर्तिकला के प्रति जागरूकता और प्रोत्साहन के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। वह वर्तमान कलाकारों के मूर्तिकला कौशल को निखारने का काम कर रहे हैं।

2. 11 मार्च, 1939 को आध्यात्मिक नगर पुरी, ओडिशा में जन्मे श्री साहू को, आस-पास रहने वाले मूर्तिकारों को पत्थर से सुंदर मूर्तियां बनाते हुए देखकर कला और शिल्प के प्रति शौक पैदा हुआ। 13 वर्ष की आयु में, उन्होंने गुरु श्री कुनिया महाराणा और बाद में गुरु श्री भुवनेश्वर महापात्रा से शिल्पकारी सीखनी शुरू की। पुरी और उसके आसपास के मंदिरों ने उन्हें प्रेरित किया और उनके अंदर के कलाकार को जाग्रत किया।

3. श्री साहू ने उदीयमान कलाकारों को पत्थर और लकड़ी की नक्काशी और इसी तरह के अन्य शिल्प में प्रशिक्षित करने के लिए 1977 में पुरी में सुदर्शन शिल्प संग्रहालय की स्थापना की। धौली शांति पैगोडा में सफलतापूर्वक मूर्तियां बनाने के बाद, उन्होंने 1985 में सुंदर स्वर्णिम सजावट के साथ बौद्ध मंदिर का निर्माण करके विश्व शांति के बौद्ध दर्शन के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। यह मंदिर आज पुरी का एक बड़ा पर्यटक आकर्षण स्थल है। इसी तरह, शिक्षकों और छात्रों को प्रेम और अपनत्व भरे माहौल में श्रेष्ठ कौशल साझा करने के लिए, उन्होंने 1991 में भुवनेश्वर में गुरुकुल के रूप में सुदर्शन कला और शिल्प ग्राम की स्थापना की। परिसर में मौजूद सुविधाओं में व्यावहारिक प्रशिक्षण स्थान, पुस्तकालय, छात्रावास, संग्रहालय और एक अनुसंधान केंद्र शामिल हैं, और इनका उद्देश्य भावी पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक तरीके से शिल्प को पुनर्जीवित करना है।

4. श्री साहू बौद्ध मूर्तियां और भित्ति चित्र बनाने के लिए 1976 से जापान सहित कई देशों का दौरा कर चुके हैं। 1986 में, उन्होंने अमेरिका में आयोजित भारत महोत्सव में भाग लिया और अपने व्याख्यान और प्रदर्शनियों के माध्यम से भारतीय प्राचीन मूर्तिकला को लोकप्रिय बनाया। उन्होंने भारत और विदेश के कई प्रमुख शहरों में एकल और समूह प्रदर्शनियों में भाग लिया है। उनमें से, 2011 और 2018 में, जहांगीर आर्ट गैलरी, मुंबई की प्रदर्शनी बड़ी सफल रही थी, और प्रतिष्ठित कला पारखियों और समालोचकों ने इनकी प्रशंसा की थी। 2018 में, इंडिया गेट लॉन में ओडिशा पर्व के अवसर पर उनके शो ने दिल्ली के लाखों लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने आज भी मार्गदर्शन, प्रेरणा और सृजन का अपना कार्य जारी रखा हुआ है, बढ़ती उम्र में भी उनके उत्साह में कोई कमी नहीं आई है जिसका श्रेय बदलती पसंद के प्रति उनकी अनुकूलन क्षमता, नए विचार और एक अनुशासित जीवन शैली को दिया जा सकता है।

5. श्री साहू को विभिन्न पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं जिनमें वर्ष 1976 में श्रीखेत्र श्री; भारत के राष्ट्रपति द्वारा वर्ष 1981 में पत्थर की नक्काशी के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार; वर्ष 1988 में पद्म श्री; वर्ष 2003 में भारत के उपराष्ट्रपति द्वारा कमलादेवी चट्टोपाध्याय पुरस्कार और शिल्प गुरु पुरस्कार और वर्ष 2012 में ओडिशा ललित कला अकादमी द्वारा धर्मपद पुरस्कार शामिल हैं। वर्ष 2011 में, उत्कल संस्कृति विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर ने उन्हें डी.लिट. की मानद उपाधि से सम्मानित किया। 2018 में, उन्हें ओडिशा हथकरघा और हस्तशिल्प विकास और संवर्धन परिषद का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। उनके जीवन और कार्यों पर एक सचित्र जीवनी, "सुदर्शन साहू – ए लीगेसी सेट इन स्टोन" वर्ष 2018 में प्रकाशित हुई थी। अस्सी वर्षीय मूर्तिकार श्री साहू की यात्रा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।